भक्तानां विघ्न संघ प्रहरणकुशलां घोरदंष्ट्रां करालां पिंगाक्षीं पीतवस्त्रां सततमभयदां कर्पूराब्जौ वहन्तीम्।
गोपाद्रौ दीर्घिकास्थां नव जन शुभदां गौरवर्णा त्रिनेत्रां श्री ज्येष्ठाभीष्टदात्री, सकलभयहरां भैरवीं तां प्रपद्ये।
ज्येष्ठमासस्य पंचम्यां मुदिते विघनहारिणि। सदा सुखकरे देवि ज्येष्ठेश्वरि नमोस्तु ते।।



नित्य नियम पूजा



ज़्येष्ठा देवी प्रबंधक कमेटी

प्रस्तुती

ज़ीठयॉर, श्रीनगर फोन नः 0194–2501050

Publisher :
Zeashta Devi Prabandhak Committee
Zeethyar Raj Bhawan Road,
Srinagar. PH. 0194-2501050
(Post Box No.: 1423 GPO-Sgr.)

Year of publication : 2014 (Second Edition)

मूलय रु. 35/-

DTP & Printed by
ANGAD BUSINESS CENTRE
Jewel, Jammu.
PH.: 0191-2574004, 94191-86289
e-mail : printerangad@gmail.com
sumaid_1959@rediffmail.com

ऊँ श्री गणेशाय नमः

ज़्येष्ठा देवी अस्थापन

श्रीनगर, जबर–वन पहाड़ी के दामन में, बुलवाड रोड के पार्श्व में, लगभग डेढ़ किलो–मीटर उपर ग्रांड पैलेस होटल के पास ज़्येष्ठा देवी का एक प्राचीन मंदिर स्थित है। कश्मीर में शायद ही ऐसा कोई स्थान हो जहां किसी ना किसी देवी–देवता या संत–महात्मा की प्रतिष्ठा ना हुई हो।

1990 के विस्थापन के बाद कश्मीर में हिंदू तीर्थों की स्थिति बद से बदतर होती चली गई। यह मंदिर भी अपवाद नहीं था। लेकिन, कुछ श्रद्धालु भक्तों के उत्साह ने इस मंदिर को फिर से श्रद्धा और भक्ति के केन्द्र में बदल दिया।

मंदिर के कुण्ड में जल का आगमन अवरूद्ध हो गया था। कारण, कुण्ड की तली पर मलबा बिछ गया था। मंदिर के जीर्णोद्धार का कार्य सबसे पहले ए.जी आफिस और संतूर होटल के कर्मचारियों ने पर्याप्त श्रम–दान व अर्थ–दान करते हुए अपने हाथ में लिया, कुण्ड की तली पर जम चुके मलबे को उखाडा और प्राकृतिक रूप से जल के आगमन को सम्भव किया।

सन् 1992–93 में जब कश्मीर में हालात अपने चरम पर थे, तब यहाँ इन भक्तों ने पहली बार हवनादि का कार्यक्रम शुरू किया। तब से हर साल ज़्येष्ठ मॉस के कृष्ण–पक्ष की पंचमी के दिन, आज तक यह कार्यक्रम निर्बाध रूप से चल रहा है।

ज़्येष्ठा–देवी के मंदिर के आसपास घना जंगल होने के कारण, इस स्थान पर बहुत से संत महात्मा घोर तपस्या के उद्देश्य से वास किया करते थे। ज़्येष्ठा–देवी के बारे में कहा जाता है कि वे क्षीर–भवानी माता की बड़ी बहन हैं।

इस मंदिर का निर्माण कार्य आज भी चल रहा है, जो कि एक समिति द्वारा किया जा रहा है। समिति का चयन स्थानीय व विस्थापित हिन्दू वर्ग तथा राज्य व् केन्द्र के कर्मचारी, जो इन आपात–कालीन स्थितियों में भी वहाँ कश्मीर में नियुक्त है, के द्वारा किया जाता है। परिणामतः आज यहाँ 500 यात्रियों के एक साथ ठहरने की सुविधाजनक व्यवस्था है।

यूं तो समग्र कश्मीर ही प्रकृति की क्रीडा–स्थली होने से सुन्दर है लेकिन, इस मंदिर के आस पास के प्राकृतिक दृश्य अपने आप में अलोकिक हैं। तीन तरफ पहाड़ों और जंगलों की एक श्रृंखला के बीच में सुन्दर और नैसर्गिक जल कुण्ड और जल कुण्ड के बीच में भगवती ज़्येष्ठा–भवानी का मंदिर बना हुआ है। यहाँ आज की तारीख में भी नियमित रूप से दोनों समय आरती हुआ करती है। इसी कारण से आरती और भजनों के संग्रह के रूप में इस छोटी सी पुस्तक को संकलित करने का सार्थक प्रयास श्री चमनलाल मट्टू द्वारा किया गया है और ज़्येष्ठा देवी प्रबन्धक समिति ने इसके प्रकाशन करने की चेष्टा की है, जिसका स्वागत सभी भक्त–जनों द्वारा अपेक्षित है।

श्याम बिहारी

स्मस्त भक्तजन, नमस्कार !

"माता ज़्येष्ठा की कृपा सब पर बनी रहे।"

ज़्येष्ठा देवी अस्थापन कश्मीर वादी में सुचारू रूप से व्यवस्थित एक एक मात्र प्रमुख तीर्थ–स्थान बन चुका है। प्रबन्धक समिति अस्थापन के विकास एवं मंदिर परिसर में यात्रियों/भक्तों के ठहरने व निर्बाध पूजा हेतु संसाधन जुटाने को समर्पित है।

प्रबन्धक समिति ऐसे सभी भक्तों का भी धन्यवाद प्रकट करती है जिन्होंने नैतिक और आर्थिक सहयोग द्वारा इसे सम्भव बना दिया। चूंकि संसाधनों का विकास एवं सुविधाओं का रख–रखाव एक जारी प्रक्रिया है अतः हम आग्रह करते हैं कि इस निमित आर्थिक व नैतिक सहयोग जारी रखें।

ज़्येष्ठा देवी प्रबन्धक समिति का यह सपना है कि प्राचीन ज़्येष्ठा देवी मन्दिर का पूरे वैभव के साथ उद्धार/पुनर्निर्माण हो और एक व्यवसायिक महाविद्यालय की स्थापना हो। इस निमित व्यय व खाका तैयार किया जा रहा है। मैं प्रबन्धक समिति की ओर से सविनय प्रार्थना करता हूँ कि आप खुले दिल से इस हेतु आर्थिक सहयोग करें ताकि यह सपना सच हो।

ज़्येष्ठा देवी प्रबन्धक समिति श्री चमन लाल भट्टू, जो कि ज़्येष्ठा देवी के एक समर्पित भक्त है, का आभार प्रकट करती है जिन्होंने अपनी परम भक्ति से "नित्य नियम पूजा" को संकलित किया है और प्रबन्धक समिति ने इस समर्पित भक्त को सम्मान देते हुए इसे प्रकाशित करने का निर्णय लिया है।

प्रबंधक कमेटी उन सब भक्तजनों का हार्दिक धन्यवाद करती है, जिनके आर्थिक एवं नैतिक सहयोग से, प्रार्थना ग्रहः एवं सांस्कृतिक धरोहर केन्द्र और स्नान घर का पुर्ननिर्माण सम्भव हो सका है। मैं सभी भक्तजनों से यह विनर्म निवेदन करता हूँ कि अगर उनके पास कोई ऐसा पुराना ग्रंथ, किताब या कोई ऐसी वस्तु हो, जिसका हमारी सांस्कृतिक धरोहर के रुप में बड़ा महत्व है, तो कृपा करके ज्येष्ठा देवी के इस धरोहर केन्द्र के लिए उसे दान करें।

भक्तों के आग्रह पर इस अमूल्य भेंट का हम पुन्र प्रकाशन करवा रहे हैं और इस प्रस्तुति में अगर कोई त्रुटि हुई हो उसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। मैं ज़्येष्ठा देवी प्रबन्धक समिति की ओर से आग्रह करता हूँ कि आप अपने अमूल्य सुझाव भेजें ताकि भविष्य में इस प्रकाशन में और सुधार हो सके।

बी.बी.भट्ट

01 जनवरी, 2014

प्रधान

ज़्येष्ठा देवी प्रबन्धक समिति

ओं श्री गणेशाय नमो नमः

ओं शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्
प्रसन्न वदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये।
अभिप्रीतार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर् अपि
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।।
गुरु ब्रह्मः गुरु विष्णो गुरु साक्षात् महेश्वरः।
गुरु एव जगत् सर्व तस्मै श्रीगरवे नमः।।
अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगरवे नमः
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन-शलाकया
चक्षुर् उन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिव रूपिणम्।
शिरसा योग पीठस्थं धर्म कामार्थ सिद्धये।।
नमो नमो गजेंद्राय एक दन्त धरायच
नमः शिवपुत्राय श्री गणेशाय नमो नमः
ओं गौरीपुत्रं त्रिनेत्रं गज मुख सहितम् नाग यज्ञोपवीतं।
पद्माक्षं सर्व भक्ष सकल जनप्रियम्,
सर्व गन्धर्व पूज्यम्।।
सम्पूर्ण बाल चन्द्रँ वरदमतिबलं हन्तृकं चासुराणाम्।
हरेम्बं आदिदेवं गणपितं
अमलं श्रीसिध्दि दाता गणेशम्।।
यत्षट पुत्रं कमलमुदितं तस्य या कर्णिकाख्या
योनिस्तस्या प्रथितमुदरे यतदाङकार पीठम्
तस्मिन्नन्तः कुचमरनतॉ कुण्डलीतः प्रवतां
श्यामाकारां सकलजननीं सन्ततं भावयामि।।
किं किं दुखं दनुजदलिनीं क्षीयते नस्मृतायां
का का कीर्तिः कुल कमलिनि ख्याप्यते न स्तुतायाम्।
का का सिद्धिः सुरवरनुते प्राप्यते नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिन्वते चित्तमालमिबतायाम्।।

ॐ

आनन्द सुन्दर पुरन्दर, मुक्त माल्यं
मौलौ हठेन निहितं, महिषा सुरस्य।
पादाम्बुजं भवतु मे, विजयाय मञ्जु
मञ्जीर शिञ्जित मनोहरम् अम्बिकायाः।।
सौन्दर्य विभ्रम भुवो भुवनाधि पत्ये
सम्पत्ति कल्पतरव स्त्रिपुरे ! जयन्ति।
एते कवित्व कुमुद प्रकराव बोध,
पुर्णेन्दव स्त्वयि जगत् जननि प्रणामाः।।
लक्ष्मी वशी करणचूर्णसहोदराणि
त्वत्पादपंकज रजांसि चिरं जयन्ति।
यानि प्रणाममिलितानि नृणां ललाटे
लुम्पन्ति दैवलिखितानि दुरक्षराणि।।
बह्मेन्द्र रुद्र हरि चन्द्र सहस्र रश्मि,
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै,
वागीश्वरि ! त्रिभुवनेश्वरि ! विश्वमातः,
अन्त बर्हिश्चकृत संस्थितये नमस्ते।।
माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती, काली कला मालिनी,
मातन्गी विजिया जया भगवती,
देवी शिवा शाम्भवी।
शक्तिः शंकर वल्लभा त्रिनयना, वाक् वादिनी भैरवी,
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी,
माता कुमारी त्यसि।।

इन्द्राक्षी

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता
गौरी शाकंभरी देवी दुर्गा नाम्नीति विश्रुता।
कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपः
गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी।।
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री स्तपस्विनी।
मेघ श्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी
महोदरी मुक्त केशी घोररूपा महाबला।।
आनन्दा भद्रजा नंदा, रोगहंत्री शिवप्रिया
शिवदूती कराली च, प्रत्यक्षा परमेश्वरी।।
इन्द्राणी चन्द्ररूपा च, इन्द्र शक्ति परायणा
महिषा सुर संहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता।।
वाराही नारसिंही च, भीमा भैरव नादिनी
श्रुतिः स्मृति धृति मेधा विध्या लक्ष्मीः सरस्वती।।
आनंदा विजया पूर्णा, मानस्तोका पराजिता
भवानी पार्वती दुर्गा, हैमवत्यंबिका शिवा।।
शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध शरीरिणी,
सर्वमङ्गल मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।।
शरणागतदीनार्त परित्राणपरायणे
सर्वस्यतिर्हरे देवि नारायणि नमोस्तुते।।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनी।
त्राहिमां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रुणां भयवर्द्धिनी।।

गौरी-स्तुतिः

ॐ लीलारब्ध-स्थपित-लुप्ताखिल-लोकां,
लोकातीतै-र्योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम्।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुजां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां,
पादाम्भोज-ध्यान-पराणां पुरुषाणाम्।
ईशीम्-ईशाङ् गार्ध हरां तां तनुमध्यां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां,
नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम्।
सत्य-ज्ञाना-नन्दमयीं तां तडित्-आभां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां,
चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला-लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित पादाम्बुजयुग्मां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
नाना कारैः शक्ति-कदम्बै-भुर्वनानि,
व्याप्त स्वरैं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कल्याणीं तां कल्पलताम्-आनतिभाजां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
मूलाधारात्-उत्थित-वन्तीं विधिरन्ध्रं,
सौर-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
आदि-क्षान्ताम्-अक्षर मूर्त्या, विलसन्तीं,
भूते भूते भूत-कदम्ब प्रसवित्रीम्।
शब्द-ब्रह्मा-नन्द-मयीं ताम्-अभिरामां,

गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
यस्याः कुक्षौ लीनम्-अखण्डं, जगत-अण्डं,
भूयो भूयः प्रादुर्-अभूत्-अक्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीम्,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला,
सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः
साक्षी यस्याः, सर्गविधौ सहंरणे च।
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये।।
प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो,
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वाचां सिद्धिं सम्पतिम्-उच्चैः शिवभक्तिं,
तस्या वश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति।।
पुरुहूतप्रिया कान्ता कामिनी पदमलोचना।
प्रह्लादिनी महामाता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।।
अघोर व्याधि नाशी च घोर दुःख निवारिणी।
अष्टा दशभुजी दुर्गा शारिका श्याम-सुन्द्री
निर्गुणे निष्क्रिये नित्यो सच्चिदानन्द रूपणी
नमोस्तुते महाराज्ञी पाहिमाम् शरणागतम्।
ज्वालामुखी मही ज्वाले ज्वालेपिंगललोचने।
ज्वाल तेजे महातेजे ज्वालामुख नमोस्तुते
शरदा वर्दा देवी मोक्ष दाता सरस्वती
नमस्तस्यै-नमस्तस्यै नमो नमः
या देवी सर्वभूतेषा दयारूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

श्री देवी ध्यानम।

भक्तानु ग्रहकारिणी भगवती देवाधिदेवेश्वरी
दीनानाथ्कृपावती स्वजननी भक्तानुरक्ता सती।
ॐ काराक्षरवासिनी सुरनुता सर्वेश्वरी सर्वदा
भूयान्नो वरदा सदा ह्ययभय कामेश्वरी कामदा।।
या माया, मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथिनी या रक्तबीजाशनी।
शक्ति शुम्भविशुम्भदैत्यदलिनी या सिद्धलक्ष्मी परा
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता माँपातु माहेश्वरी।।

विष्णु प्रार्थना

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसद्रश्यं मेघवर्ण शुभाङ्गम्।
लक्ष्मी कान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं,
वन्दे विष्णुँ भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम्।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखास्त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्व मम देव देव।।
नमामि नारायण पादपंकजं,
करोमि नारायण पूजनं सदा।
वदामि नारायण नाम निर्मलं,
स्मरामि नारायण तत्वम् अव्ययम्।।

विषणु स्तुति

जय नारायण, जय पुरूषोत्तम, जय वामन कंसारे।
उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे।।
घोरं हर मम नरक रिपो, केशव कल्मषभारं।
मम्–अनुकम्पय दीनम्–अनाथं, कुरू भव–सागरपारम्।।
घोरं हर मम।।1।।
जय जय देव जया–सुरसूदन, जय केशव जय विष्णो।
जय लक्ष्मीमुख–कमल–मधुव्रत, जय दशकन्धर जिष्णो।
घोरं हर मम।।2।।
यद्यपि सकलम–अहं कलयामि हरे, नहि किम–अपि स सत्वम्। तत्–अपि न मुञ्चति मम् इदम्–अच्युत, पुत्रकलत्र–ममत्वं। घोरं हर मम।।3।।
पुनर्–अपि जननं पुनर्–अपि मरणं,
पुनर–अपि गर्भ–निवासम्।
सोढुम–अलं पुनर्–अस्मिन–माधव, माम् उद्धर निजदासम्। घोरं हर मम।।4।।
त्वं जननी जनकः प्रभुर्–अच्युत, त्वं सुहृत्–कुलमित्रम्।
त्वं शरणं शरणां–गतवत्सल, त्वं भव–जलधि–वहित्रं।
घोरं हर मम।।5।।
जनक–सुता–पति–चरण–परायण, शंकर–मुनिवर–गीतं।
धारय मनसि कृष्ण–पुरुषोतम, वारय संसृति–भीतिम्।।
घोरं हर मम।6।।

शिव चामर स्तुति

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिंकर पटली,
कृत–ताडन–परिपीडन–मरणागम–समये।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्,
शिवशंकर शिवशंकर हर में हर दुरितम्।।1।।
अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु–सञ्चय दलिते,
पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण–चलिते।
शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन,
शिवशंडकर शिवशंकर हर में हर दुरितम्।।2।।
भव भञ्जन सुर–रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्,
दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करूणाकर परमेश्वर भयहन्,
शिवशंकर शिवशंकर हर में हर दुरितम्।।3।।
शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये,
कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।
द्विज–क्षेत्रिय–वनिता शिशुदर कम्पित हृदये,
शिवशंकर शिवशंकर हर में हर दुरितम्।।4।।
भवसम्भव विविधामय परिपी–डितवपुषं,
दयितात्मज ममताभर–कलुषी–कृत–हृदयम्।
करू मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं,
शिवशंकर शिवशंकर हर में हर दुरितम्।।5।।

शंकर प्रार्थना

प्रणतोस्मि महादेव, प्रपन्नोस्मि सदाशिव,
निवारय महामृत्युं मृत्युंजय नमोस्तुते।
मृत्युंजय महादेव, पाहिमां शरणागतम्,
जन्ममृत्यु जरारोगैः पीडितं भवबन्धनात्।।
कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा रमन्तं हृदयारबिन्दं, भवं भवानी सहितं नमामि।।
हर शम्भो महादेव, विश्वेशामर वल्लभ,
शिव शंकर सर्वात्मन् नीलकण्ठ नमोस्तुते।
नागेन्द्र हाराय त्रिलोचणाय,भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुध्दाय दिगम्बराय,
तस्मै नकाराय नमःशिवाय।।
मातंग चरमाम्बर भूषनाय, समस्त गीर्वाण गणारर्चिताय।
त्रैलोक्य नाथाय पुरान्तकाय,
तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।
शिवा-मुखाम्भोज विकासनाय,धक्षस्य यज्ञस्यविनाशकाय।
चन्द्रारकि वैश्वानर लोचानय,
तस्मै शिकारये नमः शिवाय।।
वस्शिष्ठ कुम्भोद्भव गोतमादि मुनीन्द्र वन्ध्याय गिरीश्वराय।
श्री नीलकंठाय वृषध्वजाय,
तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकारय नमः शिवाय।।

आरती

ओम जय ज्येष्ठा माता, ओम जय ज्येष्ठा माता
तू ही कष्ट निवारे हे माँ सुख दाता
- ओम जय।

श्रद्धा भक्ति बडाकर तुम दारिद्र हरो
सकल काम प्रदायिनी दुख माँ दूर करो
- ओम जय।

महा दैत्य संहारी तू माँ दुर्गति हारी
महामोह हटा दो, ज्येष्ठेश्वर प्यारी
- ओम जय।

माता खप्पर धारी मेरी विपदा सारी
दूर करो हे माता प्रिय भक्ततन प्यारी
- ओम जय।

अमृत कुंड विराजे कमल हाथ में साजे
करे हित सभी का, निर्धन या राजे
- ओम जय।

झूठी माया सारी, हम को लगती प्यारी
अविधा दूर करो हे पीताम्बर धारी
- ओम जय।

भक्ति बडाने वाली कोई युक्ति करो
भयहारिणी माता तुम भव भय सदा हरो
- ओम जय।

हम अति दीन दुखी माँ तेरी आस खडे
जाने न विद्या कोई तेरी शरण पडे
- ओम जय।

ओम जय ज्येष्ठा माता, जय जय ज्येष्ठा माता
तू ही कष्ट निवारे हे माँ सुख दाता
- ओम जय।

आरती

ओम् जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे
हरि ओम् जय जगदीश हरे।।
जो ध्यावे फल पावे दुखविनशे मन का
स्वामी दुखविनाशे तन का
सुख सम्पति घर आवे सर्व सम्पति घर आवे
कष्ट मिटे तन का हरि ओम् जय जगदीश हरे।।
मात पिता तुम मेरे शरण पड़ूँ मैं किसकी
स्वामी शरण पड़ूँ मैं किसकी- तुम बिन और न दूजा
स्वामी बिन और न कोई
आस करूँ मैं जिसकी ओम् जय जगदीश हरे।।
तुम पूरण परमात्मा तुम अर्न्तयामी
स्वामी तुम अन्तर्यामी
पारब्रह्म जगदीश्वर तुम सबके स्वामी
हरि ओम् जगदीश हरे।।
तुम करुणा के सागर तुम पालन करता
स्वामी तुम रक्षा करता- मैं सेवक तुम स्वामी मैं मूर्ख
तुम स्वामी कृपा करो भर्ता-ओम् जय जगदीश हरे।।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति
स्वामी सब के प्राणपति
किस विधि मिलो दयामय कैसे मिलो कृपामय
तुमको मैं कुमति - ओम् जय जगदीश हरे।।

दीन बन्धु दुख हर्ता ठाकुर तुम मेरे
स्वामी तुम रक्षक मेरे
अपने चरण बडावो - दया के हाथ बडावो
द्वार पडा मैं तेरे - ओम् जय जगदीश हरे।।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा
स्वामी शाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढाओ श्रद्धा प्रेम बडाओ
सन्तन की सेवा - ओम् जय जगदीश हरे।।
ओम जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे -
भक्तजनों के संकट दास जनों के अपराध
क्षण में दूर करो - ओम् जय जगदीश हरे।।

ॐ

अजानन्तो यान्तिक्षयमवशमन्योन्य कलहैं।
अमी माया ग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः
जगतमाता जन्म ज्वर भय तमः कौमदि वया।
नमस्ते कुर्वाणः शरणमुपयामो भगवतीम्।।
मन्त्र त तन्त्र छुसन केंह ति जानान,
ज़ानान छुसय न माता चॉन्य महिमा।

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा चोरसा मनसा
च नमस्कारं करोमि नमः।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद गतम्
त्वया तन्क्षम्यतां देवि कृपया परमेश्वरि

शिव पञ्चाक्षरी मंत्र

शिवाय नमः ओं नमः शिवाय
आधार जगतुक कुनुय छु मन्त्र,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो,
जटा मुकट छुय गडिंथ च्य् दीवो।
चन्द्र अर्ध्द शेखर त्रिलोचनाय,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
च़ नीलकंठो जटन छय गंगा,
च़ मोक्षदायक गुसोञ्य नंगा।।
अलक्ष अगोचर छचपन गुफाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
बिहिथ छय गौरी च्य् सूत्य नाल्य,
वलिथ छुय सर्पन हुंदय दुशालै।
सहस्र सुर्यि तीज़ च्य् मंज जटाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
अथस च्य् डाबर च् बीन वायान,
कपाल माल त्रिशूल धारान।
भक्तयन अभय छुख दिवान यछ़ाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।
रटिथ च़ अंकुश खडगधारिथ,
धनुर धनन मंज पिनाक चारिथ।

वुदनि बु दंड्वथ करय हा माये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
भवाय दीवो शर्वाय दीवो,
भस्माय दीवो सुरान च्य् ज़ीवो।
च्य् ज़ीव पूज़ान छिय भावनाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।
संसार सुदरस म्य् तार तारुम,
अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम।
वोलुस कुकर्मव कुवासनाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
अनाथ बन्धो दयायि सागर,
संसारिक् दुःख म्य यिम छि तिम चठ्,
ज़गतस दया कर च़ ह्यथ ओमाये,
शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।

आरती

ओं श्रीमत ही भवानी छम म्य आशा चानी।
क्षणुसय मंज दुख त्
संकट दूर करतय च म्यानी।।
छय चें अरदाह बोज भवाणी,
छख सहस प्यठ चुय सवार,
अन्द्य अन्द्य दीवता चे़य सारी,
छी करान चे़य ज़ारपार।
अष्ट सिद्धी आधीन चेय छी पाद चान्य न्यंथ छलानी।
क्षणसुय मंज दूख तु संकट
दूर करतम च़ म्यानी।।
सिर्ययि तय बैयि चन्द्रम छिय
प्रारान चेय हुकुमस।
कर करि माज भवान्य आज्ञिन्या
प्रकाश बनि जगतस
चानि प्रकाशि किन्य छु सन्तोष्ट, त्रोभुवन रोज़ानी।।
क्षणसय मंज दुख तु संकट,
दूर करतम च़ म्यानी।।
येलि इन्दराज़ बैयि दीव अन्य,
तंग महिशासोरनय।
इन्दुराज ओय चैय शरनय,
पादन चे प्योय परणुय।
पत पत तस दीवताह आय, फ्रक हत्य त दोरानी।
क्षणुसुय मंज दुख तु संकट,
दूर करतम च़ म्यानी।
बूज़िथ तिहुन्द हाल सोरुय,

अद महिशासोरसय।
वातुनोवथन पाताल त्यलि,
ज़ीर दिचथस खोरसय्त,
मोकुलाविथख भयि निशि दीव करथक मेंहरबानी।
क्षणसय मंज दुख तु संकट
दूर करतम च म्यांनी।।
ओं शब्द छख सर्वशक्तिमान,
महामाया चेय बनान।
काम क्रूध लोभ बेयि अन्धकार,
भख्यतन छख च़ कासान।
चाज्य भक्ति शिव शक्ति रूप ध्यान चोन दारांनी।
क्षणसय मंज दूख त संकट,
दूर करतम च म्यांनी।।
बोजान छख व्यन्ती च़य
येति चोनुय छु दरबार,
चानि हुकुम सत्य सारि जगतुक
छु चलान अद कारबार,
अस्य ति आमत्य अर्ज़ करने दोरान त लारानी।
क्षणसुय मंज दूख त संकट,
दूर करतम च म्यांनी।।
मॉज बोजतम छुय म्य हाजथ,
अख बक्ती चानी।
गरि गरि रोजतम म्य सन्मोख,
हृदयस मंज़ भवानी।
सरस्वती हुन्द प्रसाद युथ म्य बनि, नेरि अमृत वाणी।
क्षणुसय मंज दुख तु संकट,
दूर करतम च़ म्यानी।।

भजन

दूद हरकी प्याल् बरयै साल करयै दीवी।।
अशिवानि सन्य पाद छलयै नाद बोजतैम्यॉनी।
व्रत चोनुय न्यथ ब दरयै, साल करयै दीवी।।
क्वंग कोफूर तनि मलयै जाम वलयै जरकॉरी।
हृदयस मंज प्रंग ब गरये, साल करयै दीवी।।
दूप दीप कनि प्राण आलवय जानवन्दयै पादण्नय।
बख्ति बावक्य श्लूक परयै, साल करयै दीवी।।
रंग रंग श्रूच्य श्रूच्य बूज़न वेरि चानि थव तैयार।
खिर खण्ड की थाल बरयै, साल करयै दीवी।
ही त मसवल बेयि यम्बरज़ल, वति चाने छी वुछान।
प्रेमॅ मसकी प्याल बरयै, साल करयै दीवी।।
लोकचारस दूर त्रोवथस, खुर में ओनथम बुजरस।
दूरेर चोन न बो जरयै, साल करयै दीवी।।
शुर्य त बडच़ बेयि बन्द बांदव, पेशकश छी सॉरी
पान पुशरिथ द्यान सोरूय साल करयै दीवी।।
अस्य छि आमत्य लोल हतिये,पोशि फतिये डाल्य हथ्थ।
लोल पोशन बॅ माल करयै, साल करयै दीवी।

पंचस्वती

आसय शरण चे पादन व्यनयि किन्य छुस नमिथुंय
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम चय
व्याकुलतायि मंज़ बजि आपदायिमंज़
गृह पीड़ायि मंज़ माता रछतम चय।
सरस्वती त्रिपोरसुन्दरी ज़गतमाता,
भुवनीश्वरी छख आसवुँन्य चुँय,
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र सिर्य चन्द्रम कुमार,
विष्णु, गॅणीश छी पूज़ान चेय
अंदर न्यबर वॉतिथ त्रिभुवनस सार्यसॅऽय,
गुल्य गंडिथ म्योन प्रणाम ऑस्यनय चेय।
येम्य सुन्द प्रभाव छुम में हद् रोस आसवुन,
भगवान तॅ् शीषनाग छिनुँ वनिथ ह्यकान।
ब्रह्मा तु शंकर तिम ति छिय हारिथ,
चाजि शक्ति हंज़ महिमा न ज़ानान।।
सय चण्डी दीवी रॅछित्नम म्य
योस सऽरिसय ज़गतस छय पालान,
दियतनम म्य तिछ़ बुद्ध यिहय मॉऽज दीवी
येमि सूॅत्य अशुभ भय छु नष्ट सपदान।। आसयः
ही दुर्गे चानि समुरनि ज़ीवस,
सारी भय छिय नाश सपदान।
वॉर पॉठिन करि युस चाजय सुमरना,

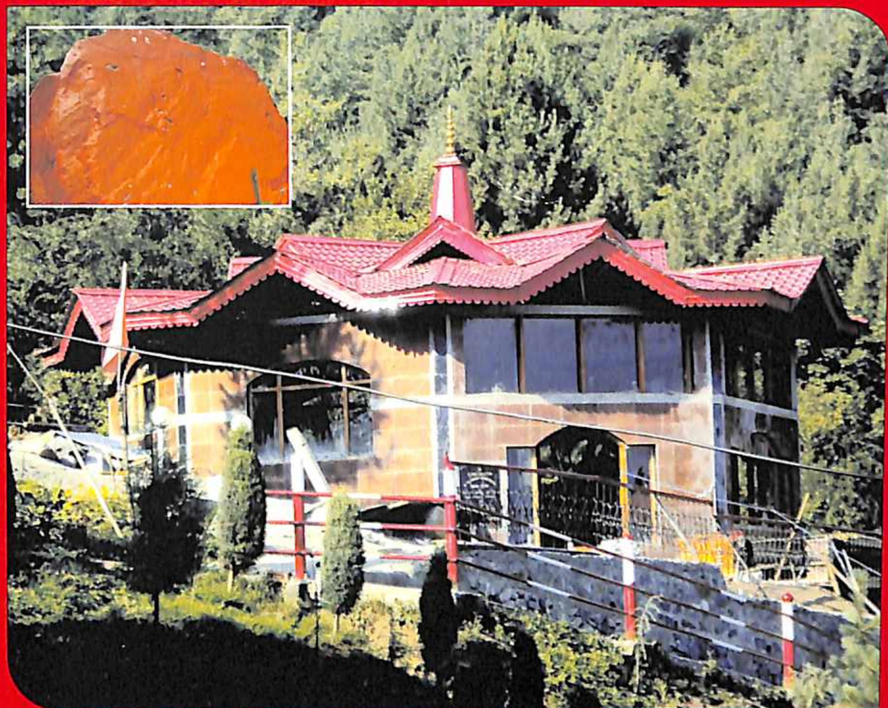
त्यलि छख ज्ञानुँच वथ मे हावान।
दरिद्र भाक बेयि कठिन्य दोख तुँ दॉद्य,
चेय रोस कुस छु में दूर करान।
उपकार छख करान तिमन सारिनय जीवन,
यिम सदा चे कुन गुल्य गंडिथ छि रोज़ान।
अस्य हय आमुँत्य बनिथ, एकाग्र च्यथ बनिथ,
छुस प्यवान चेय हय पादन तल परण। आसयः
मन्त्र हीन ऑसिथ क्रिया हीन ऑसिथ,
विधिहीन ऑसिथ यि केंछ़ा यि पोरूम।
वोन्य हय तथ सॉरिसय ही परमीश्वरी,
कृपायि किन्य म्ये ऑरितिस माता बखशुम,
कृपायि किन्य म्यें ऑरितस
क्षमायि किन्य म्यें ऑरितस
दयायि किन्य म्यें ऑरतिस माता बखशुम।
अस्य आमुँत्य बुनिथ, एकाग्र च्यथ बनिथ,
छुस प्यवान चेय हय पादन तल परण। आसयः
ही दीवी छख चॅ त्रयुम्बक पत्नी
चॅ़य वनान सती, च्चिय पार्वती।
त्रैलोकी हुन्ज़ माता भगवती
च्य वर दिवान छख च्य मृडॉनी
च्य त्रिपोर सुन्दरी, च्य रुदराणी,
च्य भयानक रूप च्य शरवरी।
च्य चण्डी च्य त्रिशूल दाराणी,

च्य कलि कालस नाश करॉनी।। आसयः
ही दीवी चानि दर्शनुक म्य अभिलाष,
प्रथविज़ि नेत्रन मंज़ म्य रूज़ितम।
चॉन्य गोण बोज़नुक तमना म्य आस्यतन
प्रथविज़ रूज्यतन म्यान्यन कनन।
चॉन्य नाम सुमरण चियतस मंज़ म्य गरि गरि,
चान्य पाद पूज़ा म्यान्यन अथन।
चोन कीर्तन करवुॅन्य रूज़्यतन वॉणी,
उपासना चॉनी कम मय्तॅ म गॅछितन।
ॲस्य हय आमुॅत्य बनिथ एकाग्र च्यथ बनिथ,
छुस प्यवान चेय हय पादन तल परन।। आसयः
युस पुरुष अकि लटि करि च्चिय कुन प्रणाम,
तसुॅन्ज़े खावि प्यठ छु इन्द्राज़ नमान।
युस पुरुष करान आसि माता चॉन्य पूज़ा,
पूज़ान तस छि सअ्रीय दीवता
युस पोरूष करान आसि माता चॉनी तोता,
दिवता तसन्जूय अस्तुति करान।
युस पोरूष करान आसि माता चोनुय ध्यान
स्वर्गचि अछरछ तस छे स्मराण।
ॲस्य हय आमुॅत्य बनिथ, एकाग्र च्यथ बनिथ,
छुस प्यवान चेय हय पादन तल परन।। आसयः
मॉज्य भवॉन्य लक्ष्मी वश करनस प्यठ,
पादुच गर्द चॉज्य ताकत सोस।

चानि प्रणाम विज़ि लगि यिमन ललाटस,
पादुच गर्द चॉन्य बडि निशान सोस।
सोय पादुच गर्द गालि दुर अक्षर तसु
जगतस मंज़ बनि सु जयकार सोस।
ॲस्य हय आमुॅत्य बॅनिथ, एकाग्र च्यथ बनिथ,
छुस प्यवान चेय हय पादन तल परन।। आसयः
कमसना दुख छि तिम ही दुखन गालवुन्य,
यिम गलन न चानि सुमरणि सूॅत्य।
कुस छि नेक नॉमी युस कोवल छि खारव्न्य
योस न बनि चाने तोतायि सूत्य।।
कसकस छि सिद्धि ही सिद्धि दात्री,
यस न प्राप्त सपदि चानि पूजायि सत्य
कम कम छ तिम योग ही ज़गत अम्बा,
यिम न सिद्ध बनन चानि चिनतन सत्य
अस्य हय आमुॅत्य बनिथ एकाग्र च्यथ बनिथ
छुस प्यवान चेय हय पादन तल परन।। आसयः
आराधना तुॅ ध्यान माता छुस'न केंहति जानान
ज़ानान छुसय न माता चॉनी तोंता।
मोदरायि चाने छुस नु केंह ति ज़ानान
ज़ानान छुसय न माता चोन लीपन।
बॅडहिश योंखती छुसय न माता ज़ानान,
चेय पत पत पकिथ कलेशस नाश सपदाना।
कुपुत्र छु जगतस मंज़ हय पॉदु सपदान,

माता कुमाता ज़ांह ति छन बनान
अस्य हय आमुत्य बनिथ, एकाग्र च्यथ बनिथ,
छुस प्यवान चय हय पादन तल परन।। आसय:
ही माता चॉन्य चरण सीवा न काम प थकुन,
न वुन्येक्यन करान।
चानि बापथ कोरुम न खर्च अज़ताम,
न वुन्यकयन चेय पथ छुस बो खर्चान।
तोति छखय सोय मॉज यस हय म्योन बेहद मोहबत,
युस गरि गरि छम रछाना
ही मूढ क्याजि छुख बेफॅयद तप किन्य,
पननिस शरीरस तकलीफ दिवान।
यज्ञ किन्य दॉन किन्य बजि दक्षिनायि किन्य,
क्याज़ि छुख घर, पनुन खॉली करान।
गछ शरण च माजि शारिकायि प्राव भक्ति,
हे करुॅन्य तसुॅन्दुय पाद सीवा।
अद फोलिमत्य पम्पोश नेत्रवसोस
लक्ष्मी च्य ब्रोंठ ब्रोंठ ह्यियि दोरुन
अस्य हय आमुत्य बनिथ एकाग्र च्यथ बॅनिथ
छुस प्यवान चेय हय पादन तल परन।। आसय:
मूढ छुस बुॅ दुखवुॅय सन्यन बरिथ छुस,
बुजर्कि दूषि किन्य खोचान छुस।
सामरथ रुस्तुय न्यरबलंत केवल,
आसरस चॉनिस थफ करिथ छुस।

ही दीवी जल बनाव में त्युथ
युथ ब प्राक्य सारिवुय वोतम भोग।
त्रॉविथ यिमय दोख मार्ग सारी,
रोज़हय बुॅ चान्यन चरणन लोर।
अस्य हय आमुॅत्य बॅनिथ, एकाग्र च्यथ बनिथ,
छुस प्यवान चेय हय पादन तल परन।। आसयः
मतलब छख दिवान दुश्मनन च् गालान,
आपदायन छख च् नाश करान।
ऑदियन चुॅ गालान व्यादियन शोंमरावान,
सोख त सम्पदा छख व्यस्ताराान।
अन्दरिमय दोख तुॅ दॉद्य जीवस च् गालान,
यिम हय अकि लटि माता नाव चोन सुरान
तिम अद कॉम न पाप निश छि मोंकलान,
यिम सदा चे कुन गुल्य गंडिथ छि रोज़ाना।
अस्य हय आमुॅत्य बनिथ, एकाग्र च्यथ बनिथ
छुस प्यवान चेय हय पादन तल परन।
आसय शरण चे पादन विनयि किन्य छुस नमिथॅय
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम चुॅय।
व्याकुलतायि मंज़ बजि आपदायि मंज़
ग्रह पीडायि मंज़ माता रछतम च़य।



View of Mata Bhagwati Shilla Temple

Donate Generously

Our A/c Nos.:
10491862141 SBI Srinagar
10250097524 SBI Talab Tillo, Jammu

For more information please visit -
Website: www.zeashtadevi.com
E-mail: zdpcsrinagar@yahoo.com